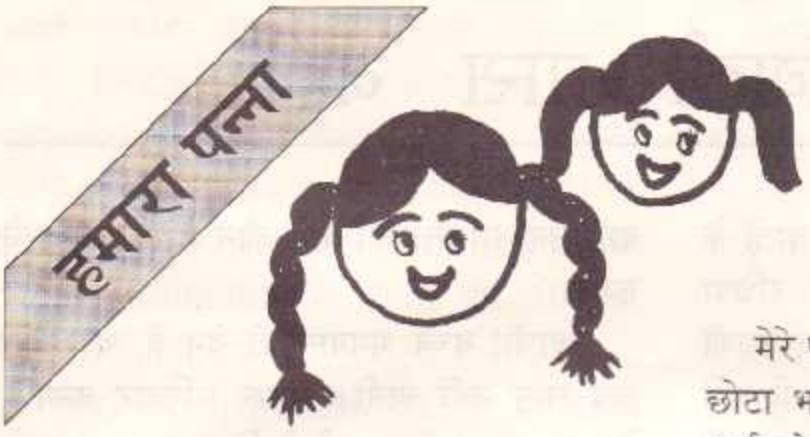

गालियां किसकी हैं?

एक बार गौतम बुद्ध भ्रमण करते हुए एक सेठ के घर पहुंचे और द्वार पर खड़े होकर पानी पिलाने का अनुरोध किया। घमण्डी सेठ ने प्रत्युत्तर में उन्हें गालियां दीं, पर वे चुपचाप आगे बढ़ गए।

सेठ सोच में पड़ गया कि मैंने इस व्यक्ति को इतनी गालियां दीं लेकिन यह फिर भी बिना कुछ कहे चुपचाप जा रहा है। सेठ से रहा न गया और वह दौड़ कर बुद्ध के पास गया और अपनी शंका जताई।

गौतम बुद्ध मुस्कराए और फिर शांत स्वर में बोले, "मान लो, तुमने मुझे एक गाय दी और मैंने उसे लेने से इन्कार कर दिया, ऐसी स्थिति में गाय किसकी होगी?"

सेठ ने तुरन्त उत्तर दिया, "मेरी।"

बुद्ध आगे बोले, "इस प्रकार तुमने जो गालियां मुझे दीं, उन्हें मैंने ग्रहण ही नहीं किया, फिर वे गालियां तुम्हारी हुई या नहीं?"

जवाब सुनकर सेठ लज्जित होकर उनके चरणों में गिर गया।

एक अबोध प्रश्न

मेरे पड़ोस में एक लड़की है। आजकल उसका छोटा भाई पैदा हुआ है। एक दिन उसकी मां भाई को गोद में लिटाकर दूध पिला रही थी। वह भी चुपचाप मां की बगल में बैठ गई। थोड़ी देर बाद मां से बोली कि जब से भाई पैदा हुआ है। तू उसको ही ज्यादा प्यार करती है। मुझे क्यों नहीं? क्या तेरे प्यार पर सिर्फ़ उसका ही हक़ है? क्या तेरी गोद में अब वही बैठेगा?

मां के पास उसके इस बाल सुलभ प्रश्न का कोई जवाब नहीं था।

पुष्पा (जखोली क्षेत्र)
(साभार-रंतरेबार)